ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, PP-407-409, YEAR-2014

आश्चर्य चूडामणि नाटक की विशेषतायें

❑ डॉ0 कन्हैयालाल झा
❑ मारकण्डेय वर्मा

सार– *आश्चर्यचूडामणि नाटक के अध्ययन मनन से उसकी कुछ विशेषताएँ प्रकट हुई हैं। वे प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–*

1. एक परम्परावादी नाटक – आश्चर्यचूडामणि एक परम्परावादी नाटक है क्योंकि शक्तिभद्र ने भी अपने से पूर्ववर्ती नाटककार कालिदास, भास, भवभूति, कुलशेखर आदि के नाटकों की भा!ति ही अपने नाटक में भारतीय संस्कृतनाट्य परम्पराओं का निर्वाह किया है। यथा– मंगलाचरण नान्दीपाठ, स्थापना, विष्कम्भक, धीरोदात्त नायक, पंचअर्थ–प्रकृतिया!, पंचकार्यावस्थाए!, पंचसन्धिया!, भरतवाक्य आदि।

2. दाक्षिणात्य वन्ति का द्योतक – आश्चर्यचूडामणि, नाटक दाक्षिणात्य वन्ति का द्योतक है क्योंकि प्रस्तुत नाटक की प्रस्तावना के आधार पर शक्तिभद्र को उस समय के दक्षिण–भारत का श्रेष्ठ कवि माना जाता है। सूत्रधार और नटी की पारस्परिक वार्तालाप से यह स्पष्टतया प्रतीत होता है कि दक्षिण देश का यह सर्वप्रथम नाटक था। दक्षिण देश के नाट्य–प्रबन्ध की सम्भावना के विषय में यह प्रतीत होता है कि दाक्षिणात्य वन्ति के द्योतक के रूप में यही नाटक प्रसिद्ध था।

3. वीर एवं अद्भुत रस की सुन्दर संसृष्टि – प्रस्तुत नाटक की एक यह भी विशेषता है कि नाटककार शक्तिभद्र ने अपनी प्रखर प्रतिभा से नाटक के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक वीर एवं अद्भुत रसों का बहुत ही सुन्दर ढंग से संसृष्टि किया है।

4. राम कथा विषयक मौलिक उद्भावनाएँ – प्रस्तुत नाटक की एक यह भी विशेषता है कि इसमें शक्तिभद्र ने अपनी प्रखर प्रतिभा के द्वारा मूल राम कथा से हटकर कुछ नवीन मौलिक उद्भावनाओं का प्रयोग करके इस नाटक में चार–चाँद लगा दिया है। यथा– रावण को राम का रूप ग्रहणकराकर सीता हरण की घटना को स्वाभाविकता प्रदान करना। कथावस्तु में कमनीयता लाने के लिए तथा रावण और शूर्पणखा के रूप परिवर्तन का भेद खोलने के लिए आश्चर्यभूत चूडामणि और अंगुलीयक की कल्पना करना। अनुसूया–वरदान की कल्पना करना। जिसका उद्देश्य सीता की अग्नि परीक्षा कराना है। नाटक के सुखान्त होने के लिए सीता–शुद्धता के साक्षी के रूप में देवर्षि नारद तथा अन्य देवताओं के लंका में उपस्थित होने की कल्पना करना। आदि अनेक राम कथा विषयक मौलिक उद्भावनाए! हैं।

5. लघुकाय छन्दों का प्रयोग – प्रस्तुत नाटक की एक यह भी विशेषता है कि इसमें शक्तिभद्र ने अनेक लघुकाय छन्दों का प्रयोग किया है। यथा– मालिनी, अनुष्टुप, शार्दूलविवीडित, द्रुतविलम्बित, वसन्ततिलका, प्रमिताक्षरा, उपजाति, स्वागता, रूचिरा वैश्वदेवी, सुन्दरी, पुष्पिताग्रा, कालभारिणी, मंजु भाषिणी, मन्दावन्ता आदि।

6. लघु मंचन – मंचन की दृष्टि से यह नाटक प्रथमतः आकार में लघु है। अतएव अल्पकाल में ही इसका अभिनय सम्भव है। प्रस्तुत नाटक में घटनाओं के तारतम्य को ध्यान में रखकर गोदावरी तट पर पर्णशाला–निर्माण, शूर्पणखा–विरूपण, सीताहरण, जटायु युद्ध, अशोक–वाटिका तथा सीता–शुद्धि जैसी हृदयस्पर्शी घटनाओं का ही रंगमंच

1. रीडर, 2. शोध अध्येता– संस्कृत विभाग, मथुरा स्नात्कोत्तर महाविद्यालय रसड़ा, बलिया (उ0प्र0) भारत

पर दर्शन कराया गया है। शेष कथांश की सूच्य कथा के रूप में सूचना दे दी गयी है।

अंको का विभाजन भी बड़ा ही मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से किया गया है। यथा–न्यून छन्दों वाले लघुकलेवरीय अंको का संगठन इस प्रकार किया गया है कि अधिक से अधिक दो घंटे में ही नाटक का अभिनय हो सकता है।

7. कुतूहल जागरण – इसमें दर्शकों के हृदय को लुभाने–रमाने के लिए कथावस्तु का इस प्रकार संगठन किया गया है कि दर्शकों की कुतूहल–वृत्ति सदा सजग रहती है। मूलकथा के परिवेश में नाटककार प्रारम्भ से अन्त तक विस्मयोत्पादक घटना चवें से दर्शकों के मानस को सतत् उत्कण्ठित करने एवं कुतूहल जागरण में सफल हुआ है।

8. प्रसाद माधूर्य एवं ओज गुणों का प्राचूर्य – प्रस्तुत नाटक की भाषा प्रसाद गुण के प्रवाह से प्रक्षालित है। इसमें शब्दाडम्बरों की विकट–बन्धता का सर्वथा त्याग किया गया है। कहीं भी दुरूह, सन्दिग्ध तथा अति समस्त वाक्यों का विन्यास दृष्टिगोचर नहीं होता है। व्यर्थ वाग्जाल से रहित तथा लम्बे कथोपकथन के अभाव के कारण प्रसादता की इतनी प्रधानता है कि सर्वसाधारण के लिए भी यह नाटक बोधगम्य हो गया है। सरल गद्य–पद्य रचना द्वारा मनोहारी चित्र–विधान सहृदयों के हृदय के आकर्षण का केन्द्र बना रहता है। प्रसाद, माधूर्य एवं ओज गुणों के माध्यम से अर्थ–बोध का सफल प्रयास ही नाटककार को विशेष कोटि का कवि सिद्ध करता है।

9. विदूषक का अभाव – प्रस्तुत नाटक में विदूषक का अभाव है। वैसे तो संस्कृत नाटकों में विदूषक का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने विदूषक के विषय में लिखा है कि–

कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः ।11
हास्यकरः कलहरतिविदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।।

विदूषक का अभाव होते हुए भी यह एक सफल नाट्यकृति है। इस नाटक का वस्तु संयोजन इस ढंग से किया गया है कि दर्शकों को कहीं भी इसका अभाव नहीं खटकता। और इसके अभाव में भी इस नाटक की कुतुहलवृत्ति सदा बनी रहती है और दर्शकों का मन भी नहीं उबता है।

संस्कृत नाट्य परम्परा में आश्चर्यचूडामणि का स्थान एवं महत्व – शक्तिभद्र ने अपने नाटक में नाटकीय कुशलता के साथ कवित्व का समन्वय करके नाटक को चिरस्थायी बना दिया है। एक ओर उन्होंने इस नाटक में अपने शास्त्रीय पाण्डित्य का समावेश किया है, तो दूसरी ओर अपनी उर्वरा कल्पना शक्ति के द्वारा उसमें अलौकिक चमत्कार भर दिया है।

शक्तिभद्र ने आश्चर्यचूडामणि में पंचअर्थप्रकृतियों, पंचअवस्थाओं और पंचसन्धियों को सुन्दर ढंग से रखा है। यद्यपि इन्होंने नाट्य शास्त्र के नियमों का पूर्ण रूप से पालन नहीं किया है। इसका कारण यह हो सकता है कि उस समय तक नाट्यशास्त्र के नियम पूर्ण कठोरता को प्राप्त न हुए हों। नाटकीय नियमानुसार शक्तिभद्र ने आश्चर्यचूडामणि के प्रारम्भ में 'नान्दीपाठ' और अन्त में 'भरत वाक्य' का प्रयोग किया है–

मन्त्रैरावर्ज्यमानं हविरमरपतेरस्तु कल्याणवृष्ट्यै
धन्वी सकल्पजन्मा सरभसमपथे सायकान् संहरेत्।
राजानो राजधर्मप्रणिहितमनसो मौलिभारं वहन्तां
प्रज्ञा यातु प्रसादं प्रतिदिनमवधूयान्तराबद्धमौनम्।।

प्रस्तुत नाटक में जो विशेषताए! सर्वप्रथम लक्षित होती है वे हैं – घटना संयोजन में सौष्ठव, घटनाओं और वर्णनों की सार्थकता, वर्णनों में स्वाभाविकता, रचना कौशल वर्णनों और घटनाओं की संकेतात्मकता, चरित्र चित्रण में वैयक्तिकता, कवित्व और रस परिपाक।

संस्कृत के अधिकांश नाटकों में यह त्रुटि प्राप्त होती है कि वे अभिनय के लिए पूर्णतया उपयुक्त नहीं होते हैं। परन्तु प्रस्तुत नाटक की विशेषता है कि यह अभिनय के लिए सर्वथा उपयुक्त है। इसके लघु कलेवरीय अंकों का संगठन इस प्रकार किया गया है कि अधिक से अधिक दो घण्टे में ही नाटक का

अभिनय हो सकता है। इस प्रकार हम देखते है कि संस्कृत नाट्य परम्परा में नाटकीय संविधान की दृष्टि से इसके गद्य–पद्य दोनों भागों में विशेष रूप से उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह और अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है। जहाँ तक छन्दोविधान की बात है उसमें प्रसिद्ध छन्दों के अतिरिक्त कालभारणी, और नर्दटक जैसे अप्रचलित छन्दों का प्रयोग यहा! पर बहुतायत से किया गया है। इस प्रकार कथा तथा हृदय पक्ष की उपर्युक्त विशेषताओं के कारण नाटककार शक्तिभद्र की सुन्दर कवित्व–शक्ति का प्रस्तुत नाटक कमनीय उदाहरण है।

भवभूति विरचित 'उत्तररामचरितम्' के बाद राम के जीवन चरित पर लिखे गये नाटकों में 'आश्चर्यचूडामणि' का नाम आदर से लिया जाता है। प्रस्तुत नाटक के नवीन सम्पादक एस0 कुप्पू स्वामी ने अपनी भूमिका में रामचरित पर आधारित दृश्य काव्य में 'उत्तररामचरितम्' के बाद इसे ही सर्वाधिक आदर दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शोध प्रबन्ध–

द्रष्टव्य–

1–4 पृष्ठ सं0– 259

5–7 पृष्ठ सं0– 260

8–10 पृष्ठ सं0– 261

11–13 पृष्ठ सं0– 262

पृष्ठ सं0– 263